Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

संजीवजी के उपन्यास साहित्य में भारतीय किसान का जीवन प्रवास ।

प्रा. सचिन भागवत खरात
हिंदी विभाग, डॉ.गणपतराव देशमुख महाविद्यालय, सांगोला
Email: sachinkharat4411@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170931
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp.149-150
September 2025
Submitted:23 Aug. 2025
Revised: 4 Sept. 2025
Accepted: 21 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

सारांश

संजीवजी के उपन्यास "फाँस" में भारतीय किसान के जीवन की दारुण यात्रा को मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया गया है। यह उपन्यास विदर्भ क्षेत्र के किसानों की दुर्दशा, उनके संघर्ष, आर्थिक संकट, सामाजिक भेदभाव और आत्महत्याओं की भयावह सच्चाई को उजागर करता है। नायक शिबू की कहानी के माध्यम से लेखक ने दिखाया है कि किस प्रकार कर्ज, सूखा, सरकारी नीतियों की विफलता और सामाजिक दबाव के चलते किसान जीवन से निराश होकर मृत्यु को गले लगाता है। यह कथा केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि उन समस्त किसानों की त्रासदी है जो जीविका के लिए संघर्ष करते-करते जीवन खो बैठते हैं। "फाँस" आधुनिक भारत के विकास मॉडल की खोखली हकीकत और किसानों की स्थिति पर तीखा प्रहार करती है।

मुख्यशब्द: *संजीव, फाँस, भारतीय किसान, कर्ज, आत्महत्या, विदर्भ, सामाजिक अन्याय, सरकारी नीति, आर्थिक संकट, किसान जीवन, ग्रामीण यथार्थ, संघर्ष।*

प्रस्तवना

हमारा भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। हमारे भारत देश में किसान को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है किसान को पूरे विश्व का पोशिंदा कहा जाता है। लेकिन आज के इस दौर में किसान की हालत बहुत ही बुरी है। पुरे विश्व का पेट भरने वाला आज खुद खाली पेट सोता है। संजीवजी ने अपना बहुचर्चित उपन्यास "फाँस" के माध्यम से भारतीय किसानों का जीवन प्रवास यहां पर हमें दिखाया है। संजीवजी ने अपने उपन्यास "फाँस" में यवतमाल जिले में स्थित बनगांव नामक गांव का चित्रण किया है। उस गांव में रहने वाला किसान शिवशंकर के परिवार का जीवन प्रवास दिखाया है। पहाड़ी इलाके में स्थित यह बनगांव में रहने वाले किसान किस प्रकार आने वाली हर एक समस्या का मुकाबला करते हैं। शिबू अपनी पत्नी शकुंतला और दो बेटियां बड़ी का नाम सरस्वती और छोटी का नाम कलावती उनके साथ अपना जीवन जी रहा था। घर के सामने ही बहुत बड़ा कुआं था। उस कुएंमें ज्यादातर पानी भी नहीं था। दोनों लड़कियां स्कूल चली जाती थी। एक दिन छोटी कलावती स्कूल के एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में (धानोरा में आयोजित) के बाद अपनी सहेली मंजुला के साथ उसके गांव मेंडलेखा में चली जाती है। तब इसके गांव में तूफान आ जाता है। मानो कुछ अनर्थ हो गया हो। कलावती किसी के साथ भाग गई। ऐसी अफवाहें पूरे गांव में आग की तरफ फैल जाती है। तब लोग कहते हैं कि और पढ़ाओ अपनी बेटियों को बैरिस्टर बनाओ इस प्रकार उसके दिल में जहर खोल देते हैं। शिबू फिर इस घटना के बाद कलावती का स्कूल जाना बंद कर देता है। यह प्रकरण लड़के - लड़कियों के प्रति समाज में भेदभाव को दर्शाता है।

संजीवजी के उपन्यास "फाँस" में भारतीय किसानों का ज्वलंत और हृदयद्रावक दृश्य दिखाया है। हर प्रकार की परेशानियों, मुश्किलों का सामना करता हुआ उसे संघर्ष करता हुआ अपना जीवन जी रहा है। शिबू और शंकुन का भी वही सपना है। जो हर माँ और बाप का होता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
प्रा.सचिन भागवत खरात, हिंदी विभाग, डॉ.गणपतराव देशमुख महाविद्यालय, सांगोला

How to cite this article:
खरात, . सचिन . भागवत . (2025). संजीवजी के उपन्यास साहित्य में भारतीय किसान का जीवन प्रवास /. Journal of Research and Development, 17(9(A)), 149–150. https://doi.org/10.5281/zenodo.17511359

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17511359
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

शिबू भी चाहता है कि अपनी दोनों लड़कियों को पढ़ा-लिखा कर एक अच्छे से घर में उनका ब्याह कर दु।लेकिन खेती करते-करते किसानी कर्ज में शिबू इस कदर लगातार फंसता ही चला जा रहा है। इसी कारण से उसकी पारिवारिक जिम्मेदारियां पूरी नहीं होती है। खेती करने के लिए सीमित साधन और तो और दिन भर दिन बढ़ाने वाला सूखा, अपने टाइम पर न आने वाली बारिश इसी कारण शिबू खेती करने के लिए सरकारी बैंकों के कर्ज लेता है। सेठ साहूकारों का भी कर्ज लेता है। यही कर्ज अब उसके गलेका 'फाँस' बन चुका है। ऐसे में ही अपने दोनों लड़कियों की शादी करने के लिए दहेज के लाखों रुपए में तथा गाड़ी के पैसे वह कहां से लेकर आता।

शिव शंकर के अंतर्मन में द्वंद चल रहा था कि वह क्या करें। किसी तरह उसने अपनी पत्नी की मदद से उसके गले में हसुली होती है। उसको भी वह उसे लेता है और अपना बैंक का कर्ज और ब्याज दे देता है। और उसके बाद वह समय और समाज की मार झेल नहीं पता है। और अंत में हारकर एक दिन अपने घर के सामने वाले कुएं में कुदकर जान दे देता है। और अपने पीछे छोड़ जाता है। जवान दो बेटियां और रोती बिलखती हुई पत्नी शकुन को जिसने गले की हसुली तक बैंक के कर्ज और ब्याज चुकाने के चक्कर में बेच दी थी। लेकिन शिबू की कहानी किसी एक किसान या एक घर की कहानी नहीं है। बल्कि आत्महत्या के लिए मजबूर उन समस्त भारतीय किसानों की महागाथा है। जो इस खेती किसानी के पेशे में बुरी तरह फसकर अपना जीवन दाव पर लगा दे रहे हैं। इस प्रकार से यह कथा विदर्भ के किसानों की कथा के साथ-साथ समस्त भारतीय किसानों को तथा उनके परिवारों की भी व्यथा कथा है।

उपन्यास की पात्र छोटी कलावती कहती हैं कि **"भारतीय किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही बड़ा होता है, और कर्ज में ही मर जाता है।"** यह कथन कितना मार्मिक, हृदयविदारक, मारक, सत्य भयावह है। किंतु आज के समय का एक कटु सत्य है। आत्महत्या के बाद पात्र – अपात्र का निर्धारण करने में हमारी सरकार और उसके उपक्रम किस हद तक मानवीय और हिंसक हो सकते हैं। इसका सशक्त उदाहरण यह उपन्यास प्रस्तुत करता है। किस बैंक का कर्ज चुकाने के लिए अपनी पूरी जिंदगी की पूरी कमाई लूटा देने के बाद सूखेपन और सरकारी नितियां की मार झेलते हुए किसी किसान की आत्महत्या के रूप में दर्ज नहीं होती है। कि बैंक में अब उसके नाम पर कर्ज की कोई भी रकम बाकी नहीं है। इस प्रकार यह उपन्यास किसानों की दुर्दशा का और सरकारी नीतियों आदि की विस्तृत पड़ताल करके इसकी मारक समीक्षा प्रस्तुत करता है।

शिबू ने तो आत्महत्या कर ली। लेकिन आत्महत्या को गलत बताने वाला हमेशा आत्महत्या पर ज्ञान दर्शन देने वाला अपने किसान भाइयों को कर्ज बैंक का हो या सेठ साहुकारोंका हो नहीं लेना ऐसा उपदेश देने वाला आत्महत्या को जीवन का धिक्कार समझने वाला भी अंत में 'सुनील' ने भी एंडोसल्फान नामक कीटनाशक पीकर अपना जीवन समाप्त किया। सुनील एक बड़ा ही नामांकित व्यक्ति और बड़ा खेतहार किसान था। सबका सलहागार, सबका आदर्श था। बड़ी खेती है याने उसका होने वाला नुकसान भी बड़ा ही होता है। ऊपर से महत्वाकांक्षी योजनाओं के असफल होने के कारण निराश हो गया और फिर फसल का कोई भी बीमा सुरक्षा भी नहीं था इन सभी कारणोंसे निराश हताश होकर सुनील ने यह कदम उठाया। सुनील का फिकरा था की **"हिम्मते मर्दा मदते खुदा"** लेकिन वह खुद ही हिम्मत हार गया और अपने ही खेत में एंडोसल्फान पीकर मौत को गले लगा दिया।

बूत बनता गया सुनील इन सबका दोषी मैं ही हूं सबकी हिम्मत बांधने वाला खुद ही हिम्मत हार गया। सुनील अपने पीछे छोड़ जाता है। पत्नी, बेटियां और बेटा बिज्जू (विजेंयद्र) को जो अपनी पढ़ाई छोड़ कर चला आता है। इसी पेशे में पीसने के लिए संजीव जी का यह उपन्यास सरकार की नीतियों और उनके विकास के नाम पर पेश किया जा रहे अविवेकपूर्ण मॉडल की भी कलई खोलता है। विकास का यह नारा और मॉडल एकदम से झूठा साबित हो रहा है। और देश का ही किसान दिन-प्रतिदिन और डूबने लगा है। उपन्यास में चित्रित गाय का प्रकरण इसका एक महत्वपूर्ण ऐसा उदाहरण है। इसमें हर एक किसान को 20 से 25 हजार की गाय सिर्फ 5 हजार में ही दी जाती है। इस गाय को खरीदने के लिए सबको लोन भी दिया जाता है। गाय को तो सभी किसानों ने ले ली लेकिन समस्या यह थी। कि इस तरह 20 से 25 लीटर दूध देने वाली गाय को चारा पानी कैसा दिया जाए। इतना दूध देने वाली गाय को खिलाएं क्या इन योजनाओं को बनाने वाले सरकार ने यह तक नहीं सोचा कि विदर्भ की इस सूखी धरती पर यह किसान अपने मवेशियों को खिलाएंगे क्या और उसका दूध कहां पर बेचेंगे। यहां पर तो लेने के देने पड़ गए। इन गायों का दूध बेचने के लिए किसान बाजार चले गए। तो उसको कोई भी खरीददार नहीं मिला। लोगों का कहना था कि इस दूध से पेट खराब होता है। इस प्रकार फिर यह नीति भी फेल हो गई। फिर उसे बेचने के लिए दलाल लोगों को कमीशन देना पड़ गया। किसान तो पहले से सूखा, अतिवृष्टी, सेठ, साहूकार इन सारे लोगों के कर्ज के पावतले दबा हुआ था। फिर यह सरकार की गाय किसान को कैसे उभरती। इस उपन्यास में यह भी दिखाया गया है। कि किस तरह सरकारी योजनाओं एवं नीतियों की भी पोल खोलता है। केंद्र सरकार द्वारा किसानों के लिए लागू किया जा रही नीतिया ज्यादातर सही नहीं है। और जो है वह भी कारगार कुशल नहीं है। भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। और यहां किसान ही देश का अन्नदाता कहलाता है। लेकिन यही अन्नदाता किसान विपरीत परिस्थितियों का संघर्ष करते हुए जीवन और मौत से जूझते हुए सभी का पेट भरता है और खुद खाली पेट सो जाता है। यह उपन्यास सिर्फ किसानों की समस्याओं उनकी दयनीय दशा एवं दुर्दशा तथा उनकी आत्महत्याओं का ही भयावह सत्य नहीं। प्रस्तुत करता अपितु किसानों को यह समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा राजनीतिक पहलूओ के साथ-साथ क्षेत्र विशेष की जानकारी भी देता है।

संदर्भ :

1.संजीव - "फाँस" 42 - 2015